रैदास के पद

अब कैसे छूटे राम रट लागी।
प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी॥
प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा॥
प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती॥
प्रभु जी, तुम मोती, हम धागा जैसे सोनहिं मिलत सोहागा॥
प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै 'रैदासा'॥

केन्द्रीय भाव : पद का मूल भाव : प्रस्तुत पद में कवि रैदास कहते हैं कि जिसके मन में भी ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति की लगन लग जाए तो फिर वह नहीं छूटती। रैदास भक्त और भगवान का सम्बन्ध बताते हुए कहते हैं कि ईश्वर हर हाल, हर काल में सर्वश्रेष्ठ है और उनकी भक्ति तथा संपर्क में आने से भक्त में भी उनके गुण समाहित होने लगते हैं।इसके अलावा उसने चंदन – पानी, दीपक – बाती आदि अनेक उदाहरणों द्वारा उनका सान्निध्य पाने तथा अपने स्वामी के प्रति दास्य भक्ति की स्वीकारोक्ति की है।

प्रतिपाद्य

प्रस्तुत पद में कवि रैदास कहते हैं कि जिसके मन में भी ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति की लगन लग जाए तो फिर वह नहीं छूटती। रैदास भक्त और भगवान का सम्बन्ध बताते हुए कहते हैं कि ईश्वर हर हाल, हर काल में सर्वश्रेष्ठ है और उनकी भक्ति तथा संपर्क में आने से भक्त में भी उनके गुण समाहित होने लगते हैं। यदि प्रभु चन्दन के समान हैं तो भक्त को पानी के समान। जिस प्रकार चन्दन के संपर्क में आने से पानी में चन्दन के गुण समा जाते हैं उसी प्रकार ईश्वर की भक्ति से भक्त का हृदय ईश-प्रेम की सुगंध से परिपूर्ण हो जाता है।जिस प्रकार बादलों को देख मयूर नृत्य करने लगता है उसी प्रकार ईश्वर के दर्शन कर भक्त का मन प्रसन्नता से नाच उठता है। चंद्रमा और चकोर के प्रेम की भांति भक्त भी सदैव अपने हृदय में ईश्वर के दर्शन पाना चाहता है। ईश्वर व भक्त के बीच दिए और बत्ती के समान सम्बन्ध है। भक्त का मन सदा प्रभु भक्ति की ज्योति से प्रकाशित रहता है। ईश्वर उस बहुमूल्य मोती के समान हैं जिसके संपर्क में आने से साधारण धागे के समान भक्त की कीमत भी बढ़ जाती है। जैसे सुहागे के संपर्क से सोना खरा हो जाता है, उसी तरह भक्त भी ईश्वर के संपर्क से शुद्ध व पवित्र हो जाता है। रैदास कवि ईश्वर की ऐसी भक्ति करना चाहते हैं जिसमें ईश्वर उनके स्वामी हों तथा वे ईश्वर के दास बन कर रहें।

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥
जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।
नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥
नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै ।
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ॥

केन्द्रीय भाव (मूलभाव)

प्रस्तुत पद में ईश्वर के कृपालु तथा समदर्शी स्वभाव का वर्णन करते हुएईश्वर को सर्वसामर्थ्यवान बताया है। रैदास जी कहते हैं जात-पात, ऊंच-नीच आदि भेदभाव मनुष्य द्वारा बनाये गए हैं। ईश्वर की दृष्टि में सब समान हैं। ईश्वर अपने निम्न कुल में जन्में भक्तों पर भी प्रेमभाव रखते हैं तथा उन्हें समाज में सम्मानित स्थान प्रदान करते हैं। ईश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं हैं।

प्रतिपाद्य

प्रस्तुत पद में ईश्वर के कृपालु तथा समदर्शी स्वभाव का वर्णन करते हुए रैदास जी कहते हैं कि ईश्वर के बिना ऐसा कोई कृपालु है जो भक्त के लिए इतना बडा कार्य कर सकता है। वे गरीब तथा दीन-दुखियों पर दया करने वाले हो । प्रभु ही ऐसे कृपालु स्वामी हैं जो अपने निम्न कुल में जन्में भक्तों के माथे पर राजाओं जैसा छत्र रख देते हैं अर्थात सम्मान व गौरव दिलवाते हैं। सारा संसार जिन्हें अस्पृश्य (अछूत) मान कर उनके प्रति भेद-भाव पूर्ण व्यवहार करता है तुम उन पर अपना प्रेम उड़ेल देते हो। बिना किसी से डरे निम्न कुल में जन्मे व्यक्ति को समाज में सम्मान दिलाने का सामर्थ्य केवल ईश्वर में ही है। उनकी दया से नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना तथा सैन जैसे भक्त कवि निम्न कुल में जन्म लेने के बाद भी तर गए। रैदास कवि संत जनों को संबोधित करते हुए कहते हैं हरि जी सब कुछ करने में समर्थ हैं। उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं।